प्रतिदर्श प्रश्न पत्र 13 (2019–20)

हिन्दी – ब (कोड–85)

कक्षा– 10

निर्धारित समय– 3 घंटे **अधिकतम अंक – 80**

सामान्य निर्देशः–

1. इस प्रश्न–पत्र में चार खंड हैं– क, ख, ग और घ।
2. सभी खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
3. यथासंभव प्रत्येक खंड के प्रश्नों के उत्तर क्रम से लिखिए।
4. एक अंक के प्रश्नों का उत्तर लगभग 15–20 शब्दों में लिखिए।
5. दो अंकों के प्रश्नों का उत्तर लगभग 30–40 शब्दों में लिखिए।
6. तीन अंकों के प्रश्नों का उत्तर लगभग 60–70 शब्दों में लिखिए।

खण्ड–क (अपठित अंश) 10

1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए। 10

शिक्षा जगत की सर्वप्रथम आवश्यकता है–समूचे शिक्षा–क्षेत्र के राष्ट्रीयकरण की। राष्ट्रीयकरण से हमारा अभिप्राय इतना ही है कि देशकाल की परिस्थितियों और आवश्यकताओं के अनुरूप ही राष्ट्रीय शिक्षा पद्धति का स्वरूप निर्धारित किया जाए। इसके साथ–साथ इस बात की भी आवश्यकता है कि शिक्षा के माध्यम का भी राष्ट्रीयकरण किया जाए जिससे विद्यार्थी अपने परिवेश में ही अपनी भाषा पद्धति में संपूर्ण गहराई एवं तन्मयता के साथ शिक्षा ग्रहण करके अपने देश के लिए उपयोगी हो सके। स्वतंत्रता प्राप्ति के इतने वर्षों बाद भी इस देश में शिक्षा में कोई राष्ट्रीय दृष्टिकोण नहीं अपनाया गया। सौ–डेढ़ सौ साल पहले लार्ड क्लाइव ने जिस पद्धति को चालू किया था वह आज भी चल रही है, हम सब जानते हैं कि उस शिक्षा पद्धति का प्रयोजन मात्र पराजित तथा हीन मनोवृति वाले क्लर्क पैदा करना था, भारतवासियों को सच्चे अर्थों में सुशिक्षित बनाना नहीं था। आज के संदर्भों में तेजी के साथ बदल रहे जीवन के मूल्यों और आने वाले युग में उस पिटी–पिटाई पद्धति का क्या महत्त्व हो सकता है जिसका उद्देश्य हमारी स्वतंत्रता तक को छीन लेना था।

1. शिक्षा–क्षेत्र के राष्ट्रीयकरण से क्या अभिप्राय है? 2
उत्तर : देशकाल की परिस्थितियों और आवश्यकताओं के अनुरूप राष्ट्रीय शिक्षा पद्धति का स्वरूप निर्धारित करना ही शिक्षा क्षेत्र का राष्ट्रीयकरण करना है।
2. शिक्षा के माध्यम के राष्ट्रीयकरण का क्या अर्थ है? 2
उत्तर : शिक्षा के माध्यम का राष्ट्रीयकरण करने का अभिप्राय है कि विद्यार्थी अपने परिवेश में ही अपनी भाषा पद्धति में संपूर्ण गहराई एवं तन्मयता के साथ शिक्षा ग्रहण करके अपने देश के लिए उपयोगी हो सके।
3. शिक्षा माध्यम के राष्ट्रीयकरण से क्या लाभ हैं? 2
उत्तर : शिक्षा माध्यम के राष्ट्रीयकरण से यह लाभ है कि समूचे देश में शिक्षा का स्तर एक हो जाएगा। इससे राष्ट्रीय भावना को बढ़ावा मिलेगा और प्रांतीय दीवारें टूट जाएँगी।
4. क्लाइव शिक्षा पद्धति का क्या प्रयोजन था? 2
उत्तर : क्लाइव की शिक्षा प्रणाली का उद्देश्य मात्र पराजित तथा हीन मनोवृति वाले क्लर्क पैदा करना था।
5. सौ वर्षों से भी पहले किसने शिक्षा पद्धति चलाई? 1
उत्तर : सौ–डेढ़ सौ वर्ष पहले लार्ड क्लाइव ने शिक्षा पद्धति चलाई थी।
6. गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए। 1
उत्तर : शिक्षा का महत्त्व।

खण्ड–ख (व्यावहारिक व्याकरण) 16

2. पद किसे कहते हैं? उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए। 1
उत्तर : शब्द जब वाक्य में प्रयुक्त होकर व्याकरणिक नियमों में बंध जाते हैं वे शब्द न कहलाकर पद कहलाते हैं। जैसे–रहीम दूध पीता है।

3. निम्नलिखित वाक्यों को निर्देशानुसार बदलिए।

$1 \times 3 = 3$

1. कर्म करने वाले को फल की इच्छा नहीं करनी चाहिए। (मिश्र वाक्य में)
उत्तर : जो कर्म करता है उसे फल की इच्छा नहीं करनी चाहिए।
2. छात्र परिश्रम करने से जीवन में सफल होते हैं। (संयुक्त वाक्य में)
उत्तर : छात्र परिश्रम करते हैं और जीवन में सफल होते हैं।

3. जो विद्वान और सत्यवादी होता है उसका सभी जगह सम्मान होता है। (सरल वाक्य में)
उत्तर : विद्वान और सत्यवादी का सदा सम्मान होता है।

4.

1. निम्नलिखित समस्त पदों का विग्रह कीजिए तथा समास का नाम लिखिए– $1 \times 2 = 2$
चन्द्रमुख, पुष्पमाला
उत्तर : चन्द्रमुख– चन्द्र रूपी मुख (कर्मधारय समास)
पुष्पमाला– पुष्पों की माला (तत्पुरूष समास)
2. निम्नलिखित विग्रहों के समस्त पद बनाकर समास का नाम लिखिए। $1 \times 2 = 2$
पानी की चक्की, महान् है जो पुरूष
उत्तर : पानी की चक्की– पनचक्की (तत्पुरूष समास)
महान् है जो पुरूष – महापुरूष (कर्मधारय समास)

5. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए। $1 \times 4 = 4$

1. बलिदानियों का देश सदा आभारी रहेगा।
उत्तर : देश सदा बलिदानियों का आभारी रहेगा।
2. ये पुस्तकें मेरे को नहीं चाहिए।
उत्तर : ये पुस्तकें मुझे नहीं चाहिए।
3. मैं तो पहले ही कहा कि ऐसा मत करो।
उत्तर : मैंने तो पहले ही कहा था कि ऐसा मत करो।
4. क्या आप उसकी बात समझ लेते हो?
उत्तर : क्या आप उसकी बात समझ लेते हैं?

6. उचित मुहावरों द्वारा रिक्त स्थान को पूरा कीजिए– $1 \times 4 = 4$

1. जंगल में शेर को देखते ही मेरे ..... गए।
उत्तर : प्राण सूख (प्राण सूखना)
2. वन कटने पर पशु–पक्षियों ने शहरों में ..... लिया।
उत्तर : डेरा डाल (डेरा डालना)
3. सफलता प्राप्त करने के लिए बहुत ..... पड़ते हैं।
उत्तर : पापड़ बेलने (पापड़ बेलना)
4. बेटे ने जब पिता को गलत जवाब दिया तो उनका ..... गया।
उत्तर : खून खौल (खून खौलना)

खण्ड–ग 28

(पाठ्य पुस्तक एवं पूरक पाठ्य पुस्तक)

7. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन के उत्तर 30–40 शब्दों में लिखिए। $2 \times 3 = 6$

1. सुभाष बाबू के जुलूस में स्त्रियों ने क्या भूमिका निभाई?
उत्तर : सुभाष बाबू के जुलूस में स्त्रियों की विशेष भूमिका रही। स्त्रियों का एक बड़ा भाग जुलूस के रूप में आगे बढ़ रहा था। जुलूस में जब सुभाष बाबू व उनके साथियों पर पुलिस ने लाठी प्रहार किया तो स्त्रियों ने मोनुमेट की सीढ़ियों पर चढ़कर झंडा फहरा दिया। ठीक चार बजकर चौबीस मिनट पर स्त्रियों के दल ने निर्धारित प्रतिज्ञा भी पढ़ी। इस प्रकार स्त्रियों के द्वारा ही झंडा दिवस का प्रयास सफल रहा। उन्होंने कई स्थानों पर धरने भी दिए जबकि पुलिस निरंतर लाठी प्रहार एवं गिरफ्तारियाँ कर रही थी।
2. निकोबार द्वीप समूह के विभक्त होने में निकोबारियों का क्या मत था?
उत्तर : निकोबार द्वीप समूह पर रहने वाले लोगों का विश्वास है कि कभी लिटिल अंडमान और निकोबार नामक द्वीप आपस में मिले हुए थे। निकोबार की यह परंपरा थी एक गाँव के निवासी दूसरे गाँव से विवाह संबंध नहीं बना सकते थे। तताँरा नामक युवक पास गाँव का रहने वाला था और वामीरो लपाती गाँव की। वे दोनों मन–ही–मन एक–दूसरे से प्रेम करने लगे। जब वामीरो की माँ और गाँववालों ने इस प्रेम का विरोध किया तो तताँरा ने गुस्से में आकर अपनी दैवीय शक्ति वाली तलवार से निकोबार द्वीप समूह को दो टुकड़ों में विभक्त कर दिया।
3. वजीर अली ने कर्नल को कैसे मात दी? 'कारतूस' पाठ के आधार पर बताइए।
उत्तर : कर्नल, वजीर अली को पकड़ने के लिए जंगल में डेरा डाले हुआ था। वजीर अली अचानक कर्नल के डेरे में पहुँचा। उसने कर्नल से आमने–सामने बातचीत की। उससे कुछ कारतूस भी माँगे, फिर उसने यह भी बताया कि वह वजीर अली है, यह कहकर वह उसके डेरे से साफ निकल आया। इस प्रकार से उसने मानो शेर की माँद में जाकर उसे चुनौती दे दी।
4. 'गिन्नी का सोना' लेख में शुद्ध आदर्शों की तुलना शुद्ध सोने से क्यों की गई है?
उत्तर : 'गिन्नी का सोना' लेख में शुद्ध आदर्शों की तुलना शुद्ध सोने से की गई है क्योंकि जिस प्रकार शुद्ध आदर्श शाश्वत् होते हैं उन्हें व्यावहारिकता द्वारा सुलभ बनाया जाता है वैसे ही शुद्ध सोने में ताँबे को मिलाकर उसके आभूषण बनाए जाते हैं। शुद्ध आदर्श एवं शुद्ध सोने का अस्तित्व कभी समाप्त नहीं होता।

8. 'बड़े भाई साहब' कहानी के आधार पर बताइए कि साक्षर होने और डिग्रियाँ बटोरने से बेहतर दुनियादारी की समझ होती है। तर्क और प्रमाण देकर कथन की सार्थकता सिद्ध कीजिए। 80–100 शब्दों में लिखिए। 5

उत्तर : प्रेमचन्द द्वारा रचित रचना 'बड़े भाई साहब' में एक ओर शिक्षा के अनुचित तौर–तरीकों पर व्यंग्य किया गया है तो दूसरी ओर यह भी दर्शाया गया है कि साक्षर होने और डिग्रियाँ बटोरने से बेहतर दुनियादारी की समझ होती है। कहानी में दो भाइयों को दर्शाया है– एक भाई पढ़ाई में कमजोर और दूसरा होशियार है। बड़ा भाई कमजोर है और अपने जहीन भाई को सदा यह अहसास दिलाता है कि यह उसकी तकदीर है कि वह अव्वल आ जाता है वास्तव में वह योग्य नहीं है। बड़े भाई साहब उसे बार–बार तर्कों सहित यह अहसास दिलाना चाहते हैं कि पढ़ लिखकर

डिग्रियाँ हासिल करने से दुनिया की समझ नहीं आती। इस हेतु वे उसे माँ–दादा का उदाहरण देते हैं कि वे गणित एवं विज्ञान का ज्ञान नहीं रखते लेकिन फिर भी हमसे अधिक समझदार हैं। डाक्टर की माँ का उदाहरण देते हैं कि डॉक्टर साहब आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी से पढ़े हैं लेकिन उनका घर खर्च उनकी माँ चलाती हैं। अपना उदाहरण देते हैं कि दादा तो थोड़ी–सी कमाई में कुटुम्ब को पालते थे लेकिन हम होस्टल का खर्चा सही रूप में नहीं कर सकते। महीने के बीच में ही हमारे पैसे खत्म हो जाते हैं। वास्तव में बड़े भाई का कहना सही है कि जीवन में अनुभव अनिवार्य है लेकिन यदि बड़ा भाई भी पढ़ाई में अच्छा होता तो शायद उसके विचारों में थोड़ा बदलाव होता वह अनुभव के साथ–साथ पढ़ाई को भी अनिवार्य मानता।

अथवा

चा–नो–यू की पूरी प्रक्रिया का वर्णन अपने शब्दों में लिखिए कि उसे झेन परंपरा की अनोखी देन क्यों कहा गया है? 80–100 शब्दों में लिखिए।।

उत्तर : जापान में चाय पीने की एक विशेष विधि होती है, जिसे 'चा–नो–यू' या 'टी–सेरेमनी' कहा जाता है। वहाँ पर जापानी विधि से चाय पिलाने वाला (चाजीन) आगंतुकों का स्वागत करता है तथा उन्हें सम्मानपूर्वक बिठाता है। फिर वह अँगीठी सुलगाकर उस पर चायदानी रखता है इसी बीच वह तौलिए से चाय के बरतन साफ करता है। इन सभी क्रियाओं को करने का उसका ढंग बहुत ही गौरवपूर्ण होता है। वहाँ के वातावरण में शांति इतनी होती है कि चायदानी में उबलते हुए पानी की आवाज भी सुनी जा सकती है। शांति बनाए रखने के लिए एक बार में दो या तीन आदमियों को ही प्रवेश दिया जाता है। इस विधि में मात्र दो घूँट चाय पीने की क्रिया लगभग डेढ़ घंटे तक चलती है। चाय पीने के दौरान व्यक्ति अपने भूत और भविष्य की चिंताओं को छोड़कर केवल जीवन के वर्तमान का आनंद लेता है। इसलिए इस परंपरा को झेन की अनोखी देन कहा गया है।

9. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन के उत्तर 30–40 शब्दों में लिखिए। $2 \times 3 = 6$

1. मीराबाई ने कृष्ण के रूप सौंदर्य का वर्णन कैसे किया है?

   उत्तर : श्रीकृष्ण के रूप सौंदर्य का वर्णन करते हुए मीराबाई कहती है कि उन्होंने सिर पर मोर मुकुट धारण किया हुआ है और तन पर पीले वस्त्र सुशोभित हैं। उनके गले में वैजयंती फूलों की माला शोभायमान है और वे बाँसुरी बजाते हुए, गौएँ चराते हैं तो बहुत सुन्दर लगते हैं।

2. लोगों ने बुद्ध का विरोध क्यों किया? बाद में यही विरोधी उनके अनुयायी क्यों बन गए? 'मनुष्यता' कविता के आधार पर लिखिए।

   उत्तर : महात्मा बुद्ध ने समाज में फैले सभी गलत विचारों का विरोध किया तो लोगों ने उनका विरोध किया लेकिन जब बुद्ध की करूणा के भाव सबके लिए बह निकले तो लोग उनके विरोध को भूलकर उनके सामने झुक गए।

3. कविता में तोप के विषय में क्या जानकारी मिलती है?

   उत्तर : इस कविता से हमें तोप के बारे में यह जानकारी मिलती है कि 1857 के स्वतंत्रता–संघर्ष में ये तोपें चली थीं। तब ईस्ट इंडिया कंपनी के गोरे शासकों ने भारतीय क्रांतिकारियों को दबाने के लिए इनका उपयोग किया था। इन तोपों ने न जाने कितने सारे शूरवीरों को मार डाला था। परंतु भारतीय वीर माने नहीं। कुछ वर्षों के लिए आंदोलन ठंडा जरूर पड़ गया। किंतु एक दिन पूरा देश उठ खड़ा हुआ। उन्होंने अहिंसात्मक आंदोलन से अंग्रेजों को देश से बाहर निकाल दिया। तब उनकी तोपों को मौन होना पड़ा।

4. 'कर चले हम फिदा' कविता की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि क्या है?

   उत्तर : इस गीत की पृष्ठभूमि ऐतिहासिक है। सन् 1962 में चीन ने भारत पर आक्रमण कर दिया था। इस युद्ध में अनेक भारतीय सैनिकों ने भारत चीन–सीमा पर लड़ते–लड़ते अपना अमर बलिदान दिया था। इसी युद्ध की पृष्ठभूमि पर चेतन आनंद ने 'हकीकत' फिल्म बनाई थी। इस फिल्म में भारत चीन युद्ध के यथार्थ को मार्मिकता के साथ दर्शाते हुए उसका परिचय जन सामान्य से करवाया गया था। इसी फिल्म के लिए प्रसिद्ध शायर कैफी आजमी ने 'कर चले हम फिदा' नामक मार्मिक गीत लिखा था।

10. सुमित्रानंदन पंत की कविता 'पर्वत प्रदेश में पावस' के आधार पर किसी पर्वतीय स्थान की वर्षा ऋतु की सुन्दरता का आँखों देखा हाल 80–100 शब्दों में लिखिए। 5

उत्तर : रोज बादलों का छा जाना और बरस पड़ना पहाड़ों के लिए सामान्य–सी बात है। मुझे याद आता है कि हम अपने परिवार के साथ नैनीताल की झील में नाव पर यात्रा कर रहे थे। आकाश साफ था। पहाड़ के एक कोने पर छाया थी तो दूसरे कोने पर धूप निखर रही थी। अचानक एक ओर से काले–काले बादल घुमड़ने लगे। वातावरण में नमी बढ़ने लगी। धूप एकाएक गायब हो गई। जो हवा हमें सुहावनी लग रही थी, वह अचानक ठंडी होने लगी। हमें लगा कि हमें कोई गरम वस्त्र साथ रखना चाहिए था। लो, देखते ही देखते बूँदें बरसने लगीं। मोटी–मोटी बूँदें। हमें भय लगने लगा। कहीं बरसात अधिक होने के कारण नाव न पलट जाए। हमने नाविक से कहा कि वह जल्दी किनारे पर लगाए। हम किनारे पर पहुँचे तो घाटी फिर से मुस्कराने लगी। बारिश समाप्त हो गई। बादल छँट गए और धूप फिर से निकल आई।

अथवा

'कर चले हम फिदा' कविता से आपको क्या प्रेरणा मिलती है? 80–100 शब्दों में लिखिए।

उत्तर : इस गीत को सुनकर हमें देशहित बलिदान और संघर्ष करने की प्रेरणा मिलती है। जब देश पर कोई विदेशी आक्रमणकारी चढ़ आया हो, तब हमें जी–जान लगाकर देश की रक्षा करनी चाहिए। युद्ध में चाहे कितने भी संकट आएँ, चाहे बर्फीली आँधियों का सामना करना पड़े, चाहे साँस रूक जाए, नसें जम जाएँ, मौत सामने आ जाए तो भी हमें बलिदान

देने से पीछे नहीं हटना चाहिए। भारत–भूमि हमारे लिए दुल्हन के समान है। हमें ही इसकी रक्षा करनी है। यदि यह सीता है तो हम हीं राम–लक्ष्मण हैं। हमें एक–के–बाद एक बलिदानी काफिले तैयार करने हैं ताकि आखिरी दम तक हम देश की रक्षा में काम आ सकें।

11.

1. 'पत्नी, बेटे, भाई–बंधु सब स्वार्थ के साथी हैं' – पंक्ति में निहित अर्थ को ठाकुरबारी के महंत कथन के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए तथा बताइए कि आप इससे क्या शिक्षा ग्रहण करते है? 60–70 शब्दों में समझाइये। 3

उत्तर : महंत ने हरिहर काका को अपने उपदेश में कहा कि इस दुनिया में सब स्वार्थ के साथी हैं। पत्नी, बेटे, भाई–बंधु सबमें स्वार्थ प्रबल है। इसलिए इस संसार में अधिक मोह नहीं रखना चाहिए। इसकी बजाय ठाकुरबारी में आकर जनकल्याण के मार्ग पर चलना चाहिए। महंत के इस उपदेश के पीछे स्वार्थ छिपा है। उसके मन में हरिहर काका की जमीन को हथियाने का लालच आ चुका है। इसलिए वह अपने प्रभाव और उपदेश की शक्ति से उसकी जमीन को ठाकुरबारी में मिलाना चाहता है।

इस कथन में हमें शिक्षा मिलती है कि बड़े–बड़े महंतों, संतों और महात्माओं की वाणी पर विश्वास न करके उनके कर्मों और नीयत पर विश्वास करना चाहिए।

2. प्राचीन काल से वर्तमान समय तक वृद्धों के प्रति परिवार के लोगों का व्यवहार बदला है। इस विषय पर टिप्पणी कीजिए। 60–70 शब्दों में समझाइये। 3

उत्तर : प्राचीन काल में परिवार संयुक्त थे। उनमें बड़े–बूढ़ों को विशेष स्थान प्राप्त था। परिवार प्रेम और सम्मान से चलते थे, कमाऊ–शक्ति के बल पर नहीं। आज की स्थितियाँ बदल गई हैं। आज लोग पैसे कमाने पर बल दे रहे हैं। संयुक्त परिवारों की जगह एकल परिवारों ने ले ली है। परिणामस्वरूप महत्त्व पैसे और आजादी का हो गया है। अब बच्चे न तो टोका–टाकी करने वाले वृद्धों को पसंद करते हैं और न ही बैठकर खाने वाले वृद्धों को। यह जीवन–दृष्टि का बदलाव है। यह दृष्टि एकांगी है। यह व्यवहार सबको डराता है क्योंकि एक–न–एक दिन सबको ही वृद्ध होना है। अतः समय रहते लोगों को पुनः प्रेम भरे परिवारों का महत्त्व देना चाहिए। इसके लिए जरूरी है कि अपने बड़े–बूढ़ों को सम्मान दिया जाए।

खण्ड–घ (लेखन) 26

12. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर 80–100 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए। 6

1. **मधुर वाणी**

   ✲ मधुर वाणी : एक वरदान ✲ प्रभाव और प्रयोग ✲ जीवन में महत्त्व।

2. **भ्रष्टाचार और जनता।**

   ✲ भ्रष्टाचार : अर्थ और कारण ✲ जनता पर प्रभाव ✲ भ्रष्टाचार से मुक्ति के उपाय।

3. **खेलों का जीवन में महत्त्व।**

   ✲ खेलों का महत्त्व ✲ शारीरिक और मानसिक बल ✲ जीवन में उपयोगी।

उत्तर :

1. मधुर वाणी

संत कबीर जी ने कहा है

"ऐसी बानी बोलिए मन का आपा खोय।
औरन को सीतल करै आपहु सीतल होय।।"

मधुर वाणी एक वरदान है। यह हमारे सभी कामों को बना देती है। मधुर वचन मानो वशीकरण मंत्र के समान है, जो सामने वाले व्यक्ति को सहज ही अपने वश में कर लेते हैं। कटु वचन एक तीर के समान होते हैं जो अंदर तक जाकर धँस जाते हैं जिसका घाव भरना भी मुश्किल हो जाता है। शब्दों के तीर या बाण जब चल जाते हैं तो वापस लौटकर नहीं आते। उनका प्रभाव होना निश्चित है। इसलिए मनुष्य को प्रयासपूर्वक मीठे वचन ही बोलने चाहिए। मीठे वचन बोलने वाला व्यक्ति सभी जगह से आदर–सम्मान ही पाता है परन्तु कटुभाषी व्यक्ति हमेशा निंदा का पात्र बनता है न कोई उसका मित्र बनता है तथा न कोई उससे बात करने में इच्छुक होता है। वह अकेला ही रह जाता है। कटुभाषी जो व्यक्ति होते हैं उनमें धीरे–धीरे क्रोध दुश्मनी जैसे भावों का विकास होता चला जाता है परन्तु मीठे वचन बोलने वाले मृदुभाषी व्यक्ति में नम्रता, शिष्टता जैसे गुणों का विकास और भी होता चला जाता है। मीठी वाणी बोलने का जीवन में बहुत महत्त्व है। इससे परिवार और समाज की सुख–शांति भी बनी रहती है आदर–सम्मान मिलता है सद्भावना एवं सहृदयता का संचार होता है। मधुर वाणी बोलकर हम जीवन में सफलता प्राप्त कर सकते हैं और सबके आत्मीय भी बन सकते हैं।

2. भ्रष्टाचार और जनता

आज के युग में व्यक्ति का जीवन अपने स्वार्थ तक ही सीमित होकर रह गया है। आज समाज में धन की लालसा इतनी बढ़ गई है कि व्यक्ति के प्रत्येक कार्य के पीछे स्वार्थ ही नजर आता है। प्रत्येक व्यक्ति अधिक धनी बनना चाहता है जिसके कारण वह अनैतिकता के मार्ग पर जाने में भी संकोच नहीं करता। वह येन–केन प्रकारेण धन कमाना चाहता है। भ्रष्टाचार फैलाने का सबसे बड़ा माध्यम दूरदर्शन है। विभिन्न चैनलों पर इतने अश्लील कार्यक्रम दिखाए जाते हैं कि किशोर तथा युवा वर्ग के लिए यह चरित्रहीनता सम्मान की वस्तु बन गई है। फैशन के नाम पर शरीर को 'उत्पाद' की तरह दिखाया जाता है। हमारी भ्रष्ट होती सामाजिक व्यवस्था का प्रमाण प्रतिदिन हो रहे फैशन शो है। अतः इन सब से जनता पर बहुत गलत प्रभाव पड़ रहा है। आजकल पारिवारिक संबंधों में भी भ्रष्टाचार ने जहर घोल दिया है।

3. खेलों का जीवन में महत्त्व

खेलों का हमारे जीवन में बहुत महत्त्व है। यदि हम खेल नहीं खेलेंगे तो हमारा संपूर्ण विकास नहीं हो पाएगा। अतः खेलों से ही हमारे शरीर का पूर्ण विकास होता है। खेलों से हमारा शरीर स्वस्थ, ऊर्जावान तथा गतिशील बनता है। खेलों से हमारे मन मस्तिष्क का भी विकास होता है। खेलने से हमारे शरीर में स्फूर्ति आती है, जिससे मन-मस्तिष्क तरोताजा व स्वस्थ रहता है। खेलने से मेधा का विकास होता है तथा मन में भी दृढ़ता आती है। खेलों से अन्य मानवीय गुणों का विकास भी होता है। खेलों से सहयोग, मित्रता एवं संगठन के गुणों का भी विकास होता है। खेलों में भाग लेने से हम अच्छे विद्यार्थी और अच्छे नागरिक सिद्ध होते हैं। अतः हम सभी को पूरी रूचि के साथ खेलों में भाग लेना चाहिए।

13. दैनिक जागरण समाचार-पत्र के संपादक को 80-100 शब्दों में पत्र लिखिए, जिसमें दिल्ली में बढ़ती हुई अपराध-वृत्ति की ओर अधिकारियों का ध्यान आकृष्ट कराया गया हो। 5

उत्तर :

परीक्षा भवन,
दिल्ली।
सेवा में,
श्रीमान संपादक महोदय,
दैनिक जागरण,
दिल्ली।
दिनांक : 10 अप्रेल, 2019
विषय : दिल्ली में बढ़ती अपराध-वृत्ति के संदर्भ में।
महोदय,

मैं आपके प्रतिष्ठित समाचार-पत्र दैनिक जागरण के माध्यम से दिल्ली सरकार के अधिकारियों का ध्यान दिल्ली में बढ़ती हुई अपराध-वृत्ति की ओर आकृष्ट कराना चाहती हूँ। आशा है कि आप मेरे पत्र को अपने समाचार-पत्र में प्रकाशित करेंगे। मुझे अत्यंत खेद सहित लिखना पड़ रहा है कि दिल्ली में आजकल गुंडागर्दी, लूटपाट, बलात्कार, हत्याएँ, अपहरण जैसी आपराधिक घटनाएँ नियमित रूप से बढ़ रही हैं। देश की राजधानी दिल्ली 'अमन चैन की राजधानी' न रहकर असामाजिक तत्वों व अपराधियों द्वारा 'भय व आतंक के वातावरण की राजधानी' बनकर रह गई है। जहाँ दिन-दहाड़े दुकानदारों से लूट, घरों में चोरी, छोटे बच्चों का अपहरण, लड़कियों से छेड़छाड़ व बलात्कार तो जैसे सामान्य बात हो गई है।

महोदय, दुःख तो इस बात का है कि अनेक राजनीतिक संगठन, गैर-सरकारी संस्थाओं तथा छात्र संगठनों के द्वारा अनेक बार इस ओर ध्यान दिलाए जाने के पश्चात् भी केन्द्र सरकार चुपचाप बैठी है। वह संबंधित पुलिस अधिकारियों को कठोर निर्देश जारी नहीं करती।

मेरा केन्द्र सरकार तथा पुलिस के अधिकारियों से अनुरोध है कि वे इस संबंध में कठोरतम कार्यवाही करें, जिससे अपराधियों के मन में भय उत्पन्न हो और वे अपराध करने से पहले दस बार सोचें।

धन्यवाद!
भवदीया
रोशनी रॉय

अथवा

स्वास्थ्य अधिकारी को डेंगू की रोकथाम हेतु 80-100 शब्दों में पत्र लिखिए।

उत्तर :

सेवा में,
स्वास्थ्य अधिकारी
स्वास्थ्य विभाग
मुंबई
विषय : डेंगू की रोकथाम हेतु
महोदय,

मैं मुंबई के अँधेरी क्षेत्र का निवासी विजयराज आपसे अनुरोध करना चाहता हूँ कि हमारे शहर में डेंगू का प्रकोप दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। इस हेतु कुछ रोकथाम की आवश्यकता है। शहर में सफाई अभियान चलाया जाना चाहिए। जगह-जगह पानी भरें गड्ढों को भरवाना चाहिए। मच्छर मारने की दवा का छिड़काव अत्यावश्यक है। अस्पतालों में भर्ती की सुविधाएँ बढ़ाई जाए क्योंकि जो लोग डेंगू की चपेट में आ चुके हैं उन्हें अत्यधिक मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है। जगह-जगह ऐसे शिविर लगाए जाएँ जिनमें लोगों को समझाया जाए कि डेंगू से बचाव कैसे किया जा सकता है? आशा करता हूँ कि आप मेरे विचारों पर गौर करेंगे और ठोस कदम उठाएँगे।

धन्यवाद!
प्रार्थी
विजयराज
दिनांक : 15 जुलाई, 2019

14. पुस्तकालय अधिकारी की ओर से सूचना पट्ट के लिए 40-50 शब्दों में एक सूचना बनाइए कि सभी विद्यार्थी 10 मार्च तक पुस्तकालय की पुस्तकें लौटा देंगे, तभी उन्हें वार्षिक परीक्षा के लिए अनुक्रमांक व प्रवेश पत्र मिलेगा।5

उत्तर :

सूचना पट्ट

केन्द्रीय विद्यालय

अजमेर

सूचना

पुस्तकें लौटाने हेतु

प्रिय छात्रों, दिनांक : 01 मार्च, 2019

सभी विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है कि वे 10 मार्च तक पुस्तकालय की पुस्तकें लौटा दें ताकि उन्हें वार्षिक परीक्षा के लिए अनुक्रमांक और प्रवेश पत्र समयानुसार प्राप्त हो जाए। अनुक्रमांक और प्रवेश पत्र लेने से पूर्व पुस्तकें लौटाना अनिवार्य है।

राजेन्द्र वर्मा

(पुस्तकालय अधिकारी)

अथवा

आपके विद्यालय में तुलसी जयंती के अवसर पर अंत्याक्षरी प्रतियोगिता का आयोजन होगा। इच्छुक छात्र हिंदी शिक्षक को नामांकन दें। इसकी सूचना 40–50 शब्दों में लिखिए।

उत्तर :

सूचना पट्ट

कमला बाल विद्यालय

उदयपुर

सूचना

अंत्याक्षरी प्रतियोगिता

प्रिय साथियों, दिनांक : 18 अगस्त, 2019

आप सबको सूचित किया जाता है कि 'तुलसी जयंती' के अवसर पर विद्यालय में 'अंत्याक्षरी प्रतियोगिता' का आयोजन किया जा रहा है। इच्छुक छात्र इस हेतु अपने हिंदी–शिक्षक को दिनांक 26 अगस्त, 2019 तक अपना नाम लिखवाएँ।

देवप्रकाश शर्मा

(छात्र सचिव)

15. दिनों–दिन बढ़ रहे प्रदूषण की समस्या पर मित्र से हुए संवाद को लगभग 50–60 शब्दों में लिखिए। 5

उत्तर :

अनिल : कहो मित्र, कैसे आना हुआ?

मनोज : यार, मेरी गाड़ी का टायर पंक्चर हो गया है। दफ्तर जाने में देरी हो रही है।

अनिल : अरे, तो चिंता की कोई बात नहीं। हमारा दफ्तर तुम्हारे दफ्तर के पास ही तो है। मेरे साथ चलो।

मनोज : यार, मैं बहुत दिनों से एक बात कहने की सोच रहा था।

अनिल : हाँ! कहो न, तो आपस में झिझक कैसी?

मनोज : मैं सोच रहा था कि क्यों न हम एक साथ एक ही गाड़ी में जाएँ।

अनिल : अरे, तुमने तो मेरे मुँह की बात छीन ली। मैं तो यही सोच रहा था।

मनोज : हमारे दफ्तर में आए दिन यही चर्चा हो रही है कि प्रदूषण की समस्या से कैसे निपटा जाए?

अनिल : लंच टाइम में हमारे दफ्तर में भी रोज का यही किस्सा है।

मनोज : बढ़ते प्रदूषण से हम अपनी आने वाली पीढ़ी को प्रदूषण मुक्त स्वच्छ वातावरण देने में कैसे सफल हो सकते हैं?

अनिल : बात तो तुम सही कह रहे हो।

मनोज : अगर सभी लोग इसी तरह कारें या मेट्रो का उपयोग कर कम वाहन प्रयोग करें तो हम कुछ मात्रा में तो प्रदूषण कम कर सकते हैं।

अनिल : तो फिर तय रहा। इस सप्ताह गाड़ी मैं ले जाऊँगा। अगले सप्ताह तुम्हारी बारी।

मनोज : बहुत–बहुत धन्यवाद! तुमने मेरी बात स्वीकार कर ली।

अथवा

प्रकाश अभिनय सीखना चाहता है। इस हेतु प्रकाश और उसके पिताजी के बीच हुई बातचीत को 50–60 शब्दों में संवाद रूप में लिखिए।

उत्तर :

प्रकाश : पिताजी मैं आपसे कुछ कहना चाहता हूँ।

पिताजी : हाँ–हाँ, कहो बेटा।

प्रकाश : पिताजी मैं अभिनय सीखना चाहता हूँ।

पिताजी : अपनी पढ़ाई की ओर ध्यान दो तुम्हारी बोर्ड की परीक्षाएँ हैं।

प्रकाश : पिताजी मैंने विद्यालय के मंच पर अभिनय की एक अलग पहचान बनाई है। मेरा आपसे अनुरोध है कि मुझे इस क्षेत्र में आगे बढ़ने का मौका दें।

पिताजी : बेटा तुम्हारा कहना सही है। परन्तु किस प्रकार इस क्षेत्र में बढ़ोगे?

प्रकाश : पिताजी, मैं पढ़ाई के साथ–साथ शाम के समय तानसेन विद्यालय से सांध्याकालीन अभिनय की कक्षाएँ लेना चाहता हूँ।

पिताजी : अच्छा बेटा, कल शाम को दाखिला करवाने चलेंगे लेकिन इस बात का ध्यान रखना कि तुम्हें बहुत परिश्रम करना पड़ेगा।

प्रकाश : पिताजी, मैं आपको निराश नहीं होने दूँगा।

16. 'नवरत्न तेल' का सुन्दर विज्ञापन 25–50 शब्दों में तैयार कीजिए। 5

उत्तर :

नवरत्न तेल
दो के साथ एक पैकेट मुफ्त
नवरत्न तेल कई सुगंधों में उपलब्ध
• *बालों को मुलायम व मजबूत बनाए*
• *बालों को लंबा एवं घना बनाए*
• *सभी आकारों की पैकिंग उपलब्ध*
• *अधिक चिकना*
सभी जनरल स्टोरों पर उपलब्ध

अथवा

राष्ट्रीय पुस्तक मेले में पुस्तक प्रदर्शनी हेतु 25–50 शब्दों में विज्ञापन तैयार कीजिए।

उत्तर :

पुस्तक प्रदर्शनी

राष्ट्रीय पुस्तक मेला

सभी पुस्तकें आधे दामों पर उपलब्ध

विशेष आकर्षण

- हिंदी साहित्य की विशेष पुस्तकें
- बाल-साहित्य का भंडार
- रोचक जानकारियों की पुस्तकें
- विदेशी साहित्य की हिंदी अनुवादित पुस्तकें

सम्पर्क:

रामलीला मैदान,

नई दिल्ली।

WWW.CBSE.ONLINE

Download unsolved Version of this solved paper from www.cbse.online

WWW.CBSE.ONLINE

This sample paper has been released by website www.cbse.online for the benefits of the students. This paper has been prepared by subject expert with the consultation of many other expert and p aper is fully based on the exam pattern for 2019-2020. Please note that website www.cbse.online is not affiliated to Central board of Secondary Education, Delhi in any manner. The aim of website is to provide free study material to the students.